

पद १७८

(राग: मांड जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

मै पना वोहि एकपनेके साथ है। है पना तूं सोंच मुतलकजात है।
हरशक्ल हरजा व हरहर रंग में, लाइलाअलाह जातेपाक है॥१॥
वाहद वल्ला लाशरीक अल्ला गफूर। फिर हुवा जलवे मुहम्मदका
जहूर। कोइ बना बंदा, कोई कहलाता हुजूर, कहीं हशमत करामत
का गुरूर। हाय बजुज अल्ला न कोई साथ है॥२॥ दीन दुनिया
वजूद अल्लाहि जान, कोई कहे रब्ब बे जबाँ वो बेनिशान। मैपना
होता तो कुछ करता बयाँ, मैं फना, मुरशद फना वो कुलफना।
मेहरमानिक दो जहां की आंख है॥३॥